*This question paper contains 4 printed pages.]*

**1138** *आपका अनुक्रमांक ......................*

# B.A. (Hons.) बी.ए. (ऑनर्स) II Sem. B

## HINDI – Paper IV

## हिन्दी – प्रश्नपत्र IV

## (हिन्दी कहानी)

(प्रवेशवर्ष 2011 और तत्पश्चात्)

*समय : 3 घण्टे* *पूर्णांक : 75*

*(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)*

1. किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8+8

(क) बाबू साहब जबान सम्हालकर बोलिए। आपने अपनी कन्या को शिक्षा दी है और सभ्यता सिखाई है, मैंने भी शिक्षा पाई है और कुछ सभ्यता सीखी है। आप धर्म-सुधारक हैं। यदि मैं उसके गुणों और रूप पर आसक्त हो गया, तो अपना पवित्र प्रणय उसे क्यों न बताऊँ? पुराने ढर्रे के पिता दुराग्रही होते सुने गए हैं? आपने क्यों सुधार का नाम लजाया है?

(ख) "शाहनी!" ड्योढ़ी के निकट जाकर बोला, "देर हो रही है शाहनी (धीरे से) कुछ रखना हो तो रख लो? कुछ साथ बाँध लिया है? सोना-चाँदी..." शाहनी अस्फुट स्वर में बोली, 'सोना-चाँदी'? जरा ठहरकर सादगी से कहा, "सोना-चाँदी बच्चा, वह सब कुछ तुम लोगों के लिए है? मेरा सोना तो एक-एक जमीन में बिछा है।'

(ग) .... तुम चाहे जितने बड़े अफसर बन जाओ, मेल-जोल इन लोगों से ही रखोगे, जिन्हें यह तमीज भी नहीं है कि सोफे पर बैठा कैसे जाता है... तुम्हें इनसे यारी-दोस्ती करना है तो घर से बाहर ही रखो... आस पड़ोस में जो थोड़ी बहुत इज्जत है, उसे भी क्यों खत्म करने पर तुले हो, गले में ढोल बाँधकर मत घूमो ... यह जो सरनेम लगा रखा है... यही क्या कम है.... कितनी बार कहा है कि इसे बदलकर कुछ अच्छा-सा सरनेम लगाओ... बच्चे बड़े हो रहे हैं..... इन्हें कितना सहना पड़ता है। कल पिंकी की सहेली कह रही थी... रैदास तो जूते बनाते थे ... पिंकी रोते हुए घर आई थी ... मेरा तो जी करता है बच्चों को लेकर कहीं चली जाऊँ..."

2. दिए गए निर्देशों के आधार पर किन्हीं **दो** पाठांशों का रचना कौशल लगभग 150 शब्दों में स्पष्ट कीजिए: 7+7

(क) **निर्देश : स्वदेशी आंदोलन की दृष्टि से**

नहीं, एक देशी धोती पहनकर आना था; सो भूलकर विलायती ही पहिन आए। नवल कट्टर स्वदेशी हुए हैं न ? वे बंगालियों से भी बढ़ गए हैं। देखेंगे तो दो-चार सुनाए बिना नहीं रहेंगे ? और, बात भी ठीक है। नाहक विलायती चीजें मोल लेकर क्यों रुपये की बरबादी की जाए। देशी लेने से भी दाम लगेगा सही, पर रहेगा तो देश ही में।

(ख) **निर्देश : कथा-भाषा की दृष्टि से**

फुआ-आ ! सरबे सित्तलमिण्टी (सर्वे सेटलमेन्ट) के हाकिम के बासा पर फूलछाप किनारी वाली साड़ी पहनके यदि तू भी भंटा की भेंटी चढ़ाती तो तुम्हारे नाम से भी दु-तीन बीघा धनहर जमीन का पर्चा कट जाता ! फिर तुम्हारे घर भी आज दस मन सोनाबंग पाट होता, जोड़ा बैल खरीदती ! फिर आगे नाथ और पीछे सैंकड़ों पगहिया झूलती।

(ग) **निर्देश : नारी चेतना की दृष्टि से**

नहीं जानती पिताजी ने कौन से जन्म का बदला निकाला है। एक बार मुझसे पूछ तो लिया होता। उस हालत में मैं साफ-साफ कह देती। पर किसी ने मुझसे कुछ पूछने की जरूरत ही नहीं समझी, और शादी की तारीख तक निश्चित कर दी। मेरी इच्छाओं की, मेरे अरमानों की कोई परवाह तक नहीं की। इतनी साध से सपनों का जो सुनहला संसार संजोया था, वह क्या यों ही बिखर कर

चूर-चूर हो जाएगा ? नहीं, नहीं, ऐसा नहीं होने दूँगी, तुम कोई रास्ता बताओ, नहीं तो सच कहती हूँ मैं मर जाऊँगी, मैं आत्महत्या कर लूँगी। अपने जीते जी इस अन्याय को नहीं होने दूँगी। जिन्दगी भर घुट-घुटकर मरने से फाँसी का फन्दा कहीं अच्छा है।

3. प्रेमचंद की 'माँ' कहानी की मूल समस्या पर विचार कीजिए।

**अथवा** 15

अमरकांत की कहानी 'दोपहर का भोजन' के प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए।

4. शिल्प की दृष्टि से 'इन्द्रजाल' **अथवा** 'टेपचू' कहानी का विश्लेषण कीजिए। 15

5. पठित कहानियों के आधार पर चन्द्रधर शर्मा गुलेरी **अथवा** भीष्म साहनी की कहानी कला के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए। 15